वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 23	Year 2	Volume 11	August 2014 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

कौन मनुष्य पाप नहीं करता

इस के उत्तर में उपनिषद कहते हैं जो मनुष्य प्रत्येक जीव के दुख को अपना दुख समझता है, हर एक जीव में अपनापन समझता है, जो मनुष्य हर एक जीव में परमात्मा को विद्यमान देखता है और परमात्मा में सारे ब्रहमाण्ड को देखता है, वह मनुष्य कभी पाप नहीं करता है। पाप तभी होता है, जब स्वार्थ के बशीभूत हम दूसरों के धन, पदार्थ, हक को छीनना चाहते हैं। यह तभी होता है जब हम उस ईश्वर की सता को भूल जाते है। प्रत्येक पदार्थ में परमात्मा को व्यापक मानने वाले कभी पाप नहीं कर सकते।

यदि इसी भावना से हम अपने आस पास के सभी प्राणीयों को देखें तो शायद मांसाहार बंद हो जाये।यदि यही भावना हम सारे प्राणीयों के लिये रखें तो सब जगह प्यार ही देखने को मिले। हर जीव में अपनापन समझना एक बहुत बड़ा मानविय गुण है और हमें पाप से बचाता है।

आज हम देखते हें कि कानून में सख्त दण्ड का परिधान होने के वाबजूद भी अपराध बड़ रहें हैं। उस के बारे में **उपनिषद** के विद्वान की सोच है कि राजा के दण्ड देने से केवल शरीर ही कैद होता है, मन कैद नहीं होता जब कि पाप का मूल तो मन है अतः मन से जो अधिक शक्तिशाली है जो मन को वश में कर सकता है वही पाप से बचा सकता है।

इसे समझने के लिये हमें जानना होगा कि हमारा मन से अधिक शक्तिशाली कौन है व मन किस से दिशा लेता है। जब भी हमारे मन में कोई विचार आता है या फिर इच्छा जागती है, या यूं कहें पाप करने की प्रवृति जनम लेती है तो आत्मा हमारी बुद्धि को संदेश भेजती है।

इसलिये अगर हम ध्यान से देखें तो मन को दिशा देने में आत्मा का योगदान है । अव प्रश्न उठता है कि आत्मा को कौन दिशा दे रहा है।

ऋषि मनु ने कहा है विद्या व तप आत्मा को शुद्ध करते हैं । जो व्यक्ति भगवान की सता को मानकर उसके सनिध्य में रहता हैं उसकी आत्मा ईश्वरीय गुणों द्वारा उन्नत और शुद्ध होती

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जाती है और पाप को जन्म देने वाली प्रवृतियां–– काम ,क्रोद्ध , लोभ, अंहकार और काम जैसी असुरी ताकतों को दूर रखने की शक्ति उस में आ जाती है। और यदि वह पाप करने की और बड़ भी जाये तो दयालु परमात्मा की कृपा से उसे एक दम बोध हो जाता है और वह अपने कदम वापिस खींच लेता है। साथ ही वह आगे कभी ऐसी गलती न करने की शपथ लेता है। दुसरे वे व्यक्ति होते हैं जो न तो भगवान के ठीक स्वरूप को समझते होतें हैं और न ही ईश्वर पर उनका पूर्ण विश्वास ही होता है। काम ,क्रोद्ध , लोभ, अंहकार और काम जैसी असुरी ताकतों द्वारा वशीभूत उनकी आत्मा इतनी कमजोर हो जाती है कि वह पाप करने में प्रवृत हो जाते हैं। दो चार बार उनकी आत्मा उनको रोकती है पर जब मनुष्य काम ,कोद्ध, लोभ, मोह और अंहकरा से वशीभूत होता है तो आत्मा की आवाज दब जाती है और वह पाप करने का आदी हो जाता है।

एक बार जब व्यक्ति पाप करने का आदी हो जाता है तो उसे आत्मा की आवाज सुननी बन्द हो जाती है।

अगर हम पाप से वचना चाहते हैं तो हम अपनी आत्मा को सदैव शुद्ध रखें यह तभी सम्भव है जब हम ईश्वर के सनिध्य मे रह कर ईश्वरीय गुणों को धारण करते रहें व प्रत्येक पदार्थ में परमात्मा को व्यापक माने और हर जीव में अपनापन समझें

अगला प्रश्न आता है –––उस ईश्वर तक कैसे पहुंचा जाये

इसके जवाब में **उपनिषद का विद्वान** कहता है––इसके तीन साधन हैं, पहला ज्ञान, दूसरा कर्म और तीसरा उपासना। ज्ञान को सब से पहला स्थान इस लिये दिया है क्योंकि जब तक ज्ञान नहीं ठीक कर्म नहीं हो सकता। ज्ञान न होने के कारण ही अज्ञानी लोग बाबों, तान्त्रिको के चक्कर में फसे रहते हैं और असली ईश्वर से दूर रहते हैं। इसी तरह जब तक कर्म ठीक नही तो ईश्वर की उपासना नहीं हो सकती।

इसलिये उपनिषद का विद्वान कहता है कि मनुष्य ठीक ज्ञान को महत्व दे। तभी वह पापों से दूर रह सकता है।

योगीराज **कृष्ण** गीता में कहते हैं ' संशयात्मा विनश्यति' जब आत्मा पर अज्ञान छा जाता है तो वह सत्य से दूर हो जाती है ओर ऐसी स्थिती में असत्य ही माना जाता है। इसलिये ज्ञान सर्वोपरी है। ठीक ज्ञान के बिना **मनुष्य बार बार पाप करेगा। अगर आप किसी रास्ते से भटके हुये मनुष्य** को रास्ते पर लाना चाहते हैं तो उसको ठीक ज्ञान देकर उसका अज्ञान खत्म करने में सहायता दीजिये। इसी लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाजी उसे कहा है जो कि अज्ञान का नाश और ज्ञान की वृद्धि करे।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE **अवश्य दे**
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

संपादकिय

न्यायाधीशों का जीवन अनुकरणीय होना चाहिये

अभी हाल में ही सर्वोच्च न्यायालय के एक पूर्व न्यायाधीश श्री मार्कनडे काटजू ने एक नहीं परन्तु तीन पूर्व न्यायधीशों पर जो गलत आचरण के आरोप लगायें हैं, उस ने सारे देश को झंझोड़ कर रख दिया है। यहां यह बताना आवश्यक है कि इन में दो पूर्व न्यायधीश ऐसे हैं जिन पर अपने सेवाकाल में गतल आचरण के आरोप पहले भी लगे हैं। यह अलग बात है कि जब भी न्यायपालिका के पूर्व न्यायाधीशों पर गलत आचरण के आरोप लगे हैं, सरकार ने मामला दबाने की ही कोशिश की है ताकि आम जनता का विश्वास न्याय पालिका पर बना रहे। वरना पूर्व न्यायाधीश श्री गांगुली पर जो आरोप लगे थे, उस में किसी दूसरी सेवा का अफसर अवश्य हवालात में डाल दिया जाता चाहे बाद में न्यायालय का आदेश उन्हें बरी कर देता।

इस सारे घटनाक्रम से दो बाते खुलकर सामने आती हैं। पहली यह है कि न्यायधीशों की नियुक्ति मे जो प्रक्रिया अपनाई जाती है उस में बहुत कमीयां हैं और यह पारदर्शी नहीं है। इस बारे में सब कुछ न्यायधीशों पर नहीं छोड़ा जा सकता क्योंकि बदलते भारतीय समाज का अंग होने के कारण उन में भी वह सभी बुराईयां आ चुकी हैं जो कि किन्हीं दूसरे अफसरों में देखी जा रही हैं। नई सरकार इस प्रक्रिया को बदलने का वादा कर रही है, देखें कहा तक सफल रहती है। परन्तु जो बात आम व्यक्ति को चिन्तित कर रही है वह यह है कि यदि हमारे न्यायाधीश ही भ्रष्ट होंगे तो वह कैसे न्यायालयों से न्याय की उमीद कर सकता है और ऐसे में वह न्याय के लिये किस के दरवाजे खड़खड़ाये? न्यायाधीश श्री मार्कनडे काटजू के ब्यानों से एक बात तो स्पष्ट है कि इस बदलते हुये समाज में हमारे न्यायाधीश भी राजनैतिक दबाव, पैसे के प्रलोभन व पक्षपात के उतने ही शिकार होने की सम्भावना रखते हैं जितने की दूसरी भारतीय सेवाओं के अफसर। ऐसे में यह कहा जाये कि न्याय पालिका बिल्कुल स्वतन्त्र हो तो यह बात इतना प्रभावित नहीं करती। इसके लिये पहले न्याय पालिका को अपनी स्वच्छ छवि सामने लानी होगी। शायद जनता इस बात को स्वीकार न करे कि हमारे न्यायाधीश कचहरी में कटघरे में भी खड़ें हों और निर्णय देने वाले भी।

यह सारे घटनाक्रम ने मुझे पूर्व मुख्यन्यायाधीश श्री ऐस ऐच कपाडिया के उस लैक्चर की याद दिला दी जो उन्होने **6th Setalvad Memorial Lecture, New Delhi** में दिया था।

अनुकरणीय जीवन जीना सब से बड़ा आर्दश है। न्यायाधीशों के लिये इस से बड़ी आचरण संहिता दूसरी और कोई नहीं हो सकती। ईमानदार न्यायधीश ही न्यायपालिका की स्वतन्त्रता को बचा सकने के योग्य हैं। हमारे निर्णय हमारे आदर्शों से ही प्रभावित होते है। किसी न्यायाधीश को यह नहीं भूलना चाहिये कि उसका कार्य कानून के अनुसार निर्णय देने का है न कि अपने विश्वासों और पसन्द न पसन्द के अनुसार उसे प्रभाबित करने का। न्यायाधीश को न तो किसी का आभार

Justice Shri S.H. Kapadia

लेना है और न ही यह आभार दूसरों को प्रकट करना है। किसी भी न्यायधीश के समक्ष यदि उसका अपने परिवार का सदस्य बार-बार किसी भी रूप में पेश होगा तो शायद वह ठीक निर्णय न ले सके।

इसी तरह न्यायधीश को अपने समुदाय के कार्यों में अधिक रूचि लेने से बचना होगा क्योंकि उसके समुदाय का व्यक्ति उसके सामने आरोपी के रूप में आ सकता है। इसी तरह उसे कानून के व्यवसाय के व्यक्तियों से भी अधिक घनिष्टता से बचना है, यह उसके ठीक निर्णय लेने में बाधक हो सकते हैं।

न्यायाधीश को वकीलों, राजनैतिक दलों से तथा मन्त्रियों से अपने आपको दूर रखना होगा तभी वह न्याय कर सकता है। चाहे आप कुछ भी कहें, माननीय न्यायाधीशों को कुछ संयम बरतने ही होंगे। न्यायाधीश की सारे समाज और देश के प्रति बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, इस के लिये थोड़े-थोड़े समय बाद वह अपना परिक्षण करे कि क्या उसने ऐसा कुछ तो नहीं किया जो कि उस के द्वारा ली गई शपथ के विरूद्ध हो । मुख्य बात यह है कि उसका आचरण उस के द्वारा ली गई शपथ पर ठीक उतरना चाहिये।

ऊपर वाला न्यायाधीश नीचे वाले न्यायधीश के कार्य में किसी भी प्रकार से दखलन्दाजी न करे और किसी भी हालत में भ्रष्टाचारी न्यायाधीश को राजनैतिक दवाब के कारण न बचाये।

अच्छा होगा कि न्यायपालिका से जुड़े व्यक्ति न्यायाधीश श्री काटजू के इस वक्तव्य पर ध्यान दें तभी लोगों का विश्वास न्यायपालिका में रहेगा जो कि लोकतन्त्र के पनपने के लिये बहुत आवश्यक हैं।

English version of the talk delivered by Shri **S.H. Kapadia, Chief Justice of India at the 6th Setalvad Memorial Lecture in New Delhi**

"Leading an exemplary life is the highest form of ethical conduct. This is the keystone of our modern codes of judicial conduct. We need a clean man in the black robe to uphold the independence and the integrity of the judiciary. Action is an extension of values. A Judge's obligation must start and end with his analysis of law, not with personal beliefs or preferences. The judge should not accept patronage through which he acquires office, preferential treatment or pre-retirement assignment. These can give rise to corruption if and when quid pro quo makes a demand on such Judges. Similarly, when a family member regularly appears before a Judge, adverse public perception can affect the working of the integrity of institutions like the judiciary.

The active involvement of Judges in community organisations has also evoked a similar response when their civil society associates appear as litigants before them. Frequent socialising with particular members of the legal profession or with the litigants, including potential litigants, is certain to raise, in the minds of others, the suspicion that the Judge is susceptible to undue influence in the discharge of his duties. In such a situation, Judges must keep the part of impartial, objective, fearless and independent justice alive. A Judge must inevitably choose to be a little aloof and isolated from the community at large.

He should not be in contact with lawyers, individuals or political parties, their leaders or ministers except on purely social occasions. When one enters the Judges' world, one inevitably has to impose upon oneself certain obvious restrictions. Judges owe a solemn duty to the community at large and from day-to-day they must ask themselves whether they have done or said anything which is inconsistent with the oath of office they have taken and which otherwise are consistent with their obligations as a Judge.

One more aspect needs to be highlighted. Internal interference from a high-ranking Judge which, if resisted, could lead the lower-ranking Judge being transferred or being denied promotion also needs to be deprecated. Similarly, political protection should not be given to corrupt Judges."

It is high time our judiciary revisits **Shri S.H. Kapadia. Faith lost in judiciary can shake the walls of democracy.**

शास्त्री मोडल स्कूल में तीज का त्योहार मनाया गया

फेस–1, मोहाली फोन : 2227211

शास्त्री मोडल स्कूल के प्रांगन में 31 जुलाई के दिन तीज का त्योहार बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया । इस मौके पर स्कूल की छात्राऐं रंग बिरंगे पंजाबी पहरावे पहन कर आई थी। स्कूल के आंगन में झूला सजाया गया था। प्रिंसीपल श्रीमति आर बाला ने तीज का महत्व बताते हुये कहा–––––'' हमें सभ्याचार को नहीं भूलना चाहिये। पुराने समय में यातायात के साधन कम होने के कारण, लड़कियां अपने मायके कम जाती थी, परन्तु सावन के महीने अवश्य जाती थी। इस तरह सब विछड़ी सहेलियां मिलकर तीज मनाती थी।''

Editorial-II

VEDAS SPEAK OF FORMLESS AND UNBORN GOD

The origin of Hinduism is Vedas and there is absolutely no doubt that Vedas speak of one God who is formless and unborn. Any one who takes birth and lives a life of human being, is a doer of actions, good or bad, can not be God. Rig Veda says---'*n tasay pratima asti yasay nam mahajsha.* Neither He has an image nor can be formed'

Yajur Veda xiii 4 says "O men, God existed in the beginning of the Creation. He is the Creator, Support and the Sustainer of the Sun and other luminous worlds. He was the Lord of the past creation. He is the lord of the present. He will be the Lord of all future creations. He is eternal bliss. May we all praise and adore Him as we do." The one who has such attributes is surely unborn and can not be a human being.

But, then many raise a question, 'If Vedas speak of one God then how Hindus are seen worshipping so many gods that defies the concept of one God."

Well for this we need to understand that when we want to know or come close to somebody, it is natural that we look for his name or sometimes give him a name, generally based on his prominent quality. This applies to God also. But, since God's qualities, nature attributes and activities are infinite so He has infinite names and generally we call Him by the name what can really connect us with Him. For example when a man is in trouble and seeks His support, he calls Him *'Data'* and 'dayalu'(the one who is kind). Those who look to Him as source of Power to scare the wicked call Him *'Shakti'*. In a nut shell different people call Him by the attribute which endears them to Him. But, then calling Him by different names does not mean that he has different forms or there are many Gods.

Going further, He is called Shiva being Blissful and benefactor of all. Being Creator of the Universe He is called Brahma. Being all pervading he is called Vishnu. Being Protector of all and All-powerful many call Him Inder. All glorious, some call Him Agni. He illuminates this multiform universe so many call him Virat. He punishes the wicked so many call Him Rudra. Likewise he has countless names

But, in Vedas and Upanishads God has been referred mostly by the name AOM which is the holiest name of God. It is composed of three letters A, O and M. A stands for *virat, Agni and Vishwa* etc. O stands for *Hiranyagrabha, vayu and yaijas* etc. M stands for *Ishwara, Aditya and Prajan* etc. Rig Veda says, "He is one, but the wise call Him by different names; such as Indra, Mitra, Varuna, Agni, Diviya and many others which manifest his qualities and attributes."

Differentiating between *devta* and God, Vedas say whosoever possesses useful and brilliant qualities is *devta* and the one who is the sustainer of all *devatas* is the adorable God. It should set aside the notion being carried by many especially in foreign countries that Hinduism speaks of countless Gods. Rama, Krishna and all other great souls were *devata* but not God as God is one who is unborn.

सभी ज्ञानी, सन्त, महात्मा एक निराकार और अजन्मा ईश्वर की ही बात करते हैं

स्वामी दयानन्दं के अनुसार ---ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वान्तरयामी व सर्वशक्तिमान, अजन्मा, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्वीकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वश्वर, सर्ववयापक, सर्वानतर्यामी, अजर,अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।--अर्थात ईश्वर एक है जिसका न कोई आकार है नही जन्म होता है, वह कण कण में समाया हुआ है, वह हमारे अन्दर भी है, बात सिर्फ अन्दर झांकने की है।

गुरू नानक देव कहते है

एको सिमरो नानका, जो जल थल रहा समाय।
छूजा कीहि सिमरिये, जो जन्मे ते मर जाये।

जो कि हर जगह विराजमान है अर्थात सर्वव्यापक है उसी का ध्यान करें। जो ऐसे सर्वव्यापक ईश्वर को छोड़कर किसी दूसरे की, जिसने मानव का शरीर धारण किया हो, सिमरन करता है उसका जन्म लेना ही बेकार है अर्थात वह जीते जी मरे हुये के सामान है।

गुरू नानक देव पुनः कहते हैं––
एक्योंमकार कर्ता निर्भो अकाल––– वह एक ही है, दूसरा नहीं हो सकता

यही नहीं गुरू गोबिन्द सिंह ने घोषणा की है––––जो मुझे ईश्वर का स्थान देगा वह सब से बड़ा पापी होगा।

अच्छा होगा हम सभी हिन्दु इस बात पर विचार करें और एक ईश्वर की ही पूजा करें जिसका मुख्य नाम ओइम है।

इसलाम प्रमुख ग्रंथ कुरान और ईसाई मत की पुस्तक बाईबल भी ईश्वर की लगभग ऐसी ही व्याख्या करते हैं

Shankaracharya in the 'Vivekachudamani' teaches humanity that the one eternal, universal power is what enlivens and animates this universe, which is formless, omnipresent, omnipotent, omniscient, pure, without parts, changeless, which is the innermost dweller of all beings, which is beyond comprehension, which is non-dual and he exhorts men to understand this truth while leading their mundane lives.

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़,
उससे तो चक्की भली पीस खाय संसार।

अर्थात् यदि पत्थर या पत्थर की मूर्ति पूजने से भगवान मिलते हैं तो क्यों न मैं पहाड़ की ही पूजा करूँ? उससे (पत्थर की मूर्ति से) तो पत्थर से बनी आटा पीसने की चक्की अच्छी या महत्त्वपूर्ण है जिससे सारा संसार आटा पीस कर अपनी भूख मिटाता है।

रक्षा बन्धन पर सन 1920 में दिया गया महात्मा श्रद्धानंद का संदेश

माता का बच्चों पर जो उपकार होता है उसका संसार में कोई मुकाबला नहीं। यही कारण है कि ईश्वर के बाद मां का स्थान है और उसे शक्ति माना गया है और वह श्रद्धा और भक्ति की अधिकारिणी होती है। मां का ही एक रूप बहन है वह अपने भाई को प्रेम और रक्षा के लिये अधिकार रूप देखती है। एक सुशिक्षित और सभ्य देश में देश की मातांऐ पूजी जाती हैं, बहने प्रेम और रक्षा की अधिकारिणी समझी जाती **हैं।**

प्राचीन भारत में माताओं का कितना उंचा स्थान था उसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि **युधिष्टर,** भीम और अजुर्न अपने आप को पाण्डव न कहलाकर 'कौन्तेय कहलवाते थे। **श्री कृष्ण** अजुर्न को कुन्तीपुत्र कहकर सम्बोधन करते थे। राम अपने आप को ' कौशल्य नन्दन' कहलवाते थे और यही कारण था उन माताओं का अर्शीबाद फलता थां

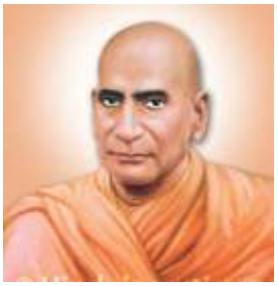

स्त्री जाति पर शत्रु का आक्रमण एक ऐसी घटना हुआ करती थी कि उस पर हमारे योद्धाओं के ही नहीं, साधारण लोगों के खून भी उबल पड़ते थे। राम ने रावण को मारा स्त्री की रक्षा के लिये। पाण्डवों ने कोरवों का सेहार कर दिया द्रोपदी के अपमान का बदला लेने के लिये। भारतीय इतिहीस में अनेक युद्ध महिलाओं की मान रक्षा के लिये हुये। यह इस बात को बताता है कि कितना उंचा था मां औा बहन का स्थानं।

रक्षाबन्धन उन्ही भावों का चिन्ह है। आज भी वही संदेश देता है कि अपनी बहनों को आदर दो, उनकी रक्षा करना हमारा फर्ज है। अगर हम इस संदेश को नहीं सुनते हैं तो हम घूल में मिल जायेंगे।

जीवन में उदार बन कर कई बातो को छुपाने में ही बुद्विमता है—शायद नटवर सिंह यह समझते

नीला सूद

अभी हाल में ही पूर्व कांग्रेस मन्त्री श्री नटवर सिंह की एक किताव ने जिस में की कांग्रेस पार्टी की प्रधाना श्रीमति सोनिया गांधी के बारे में ऐसी बातों का खुलासा भी किया गया जिन के बारे में यह अपेक्षा की जाती है कि कोई भी व्यक्ति अगर अपने ओहदे के कारण उन्हे जानता है तो गोपनिय ही रखेगा। परन्तु नटवर सिंह ने उन बातों का खुलासा कर यह जता दिया कि हम नाम और पैसे के लिये कुछ भी कर सकते हैं। आपसी विश्वास के धागे धन और शोहरत के लोभ के आगे बहुत कमजोर पड़ जाते हैं।

पंजाब की यह कहानी यह बताती हैं कि दूसरो की ईज्जत मान की लोग कितनी परवाह किया करते थे।। एक बहुत बड़े सिक्ख जिंमीदार अपने परिवार के साथ एक बहुत बड़ी हवेली में रहते थे। सरदार जी की सारे गांव में बहुत इज्जत थी। वह न केवल धन दौलत से बड़े थे पर दिल से भी बड़े थे।

उनकी हवेली में नीचे के हिस्से में सारा परिवार रहता था और उपर के हिस्से में अनाज को रखने का गोदाम था। सर्दियों के दिन थे, उपर गाोदाम में किसी बाहर के आदमी की हरकत की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे कोई चोरी कर रहा हो। बाबा जी के पांचो लड़के डंडे ले कर उपर गाोदाम की और जाने ही लगे थे कि उन्होने उपर सीढ़ीयों से बाबा जी को नीचे आते देखा। ''वापिस जाओ, वैसे ही कुत्ता अन्दर आ गया था——————बाबा जी ने यह कह कर लड़कों को बापिस भेज दिया।

सवेर हुई तो पांचो लड़के उपर गोदाम में गये। यह स्पष्ट था कि कोई चोर आया था उसके पावो के निशान थे और एक बोरी खुली हुइ थी जिसमें से कि कुछ अनाज कम हुआ था और ईधर उधर भी बिखरा पड़ा था। हाँ चोरी हुये अनाज की मात्रा अधिक न थी। पर किसी में इतना साहस नहीं था कि सरदार जी से कुछ कहे। ऐसा हर तीसरे चोथे दिन होता और कई महीने तक चलता रहा। खास बात यह थी कि चोर बहूत ही थोड़ा अनाज ले कर जाता था।कोइ बड़ा डाका नही डालता।जब भी लड़के चोर को सामने लाने के लिये कुछ कदम लेना चाहा तो सरदार जी उन्हे चुप करा देते और बात वहीं कि वहीं रह जाती। बात गांव में हर जगह फैल गई थी पर साथ ही एक पहेली बन कर रह गई।

कुछ महीने बाद अनाज की चोरी अपने आप ही बन्द हो गई। पर लोगों के लिये यह पहेली ही रही। समय बीतता गया और बाबा जी भी स्वर्ग सिधार गयें। पर यह बात लोग अक्सर करते कि किस तरह बाबा जी ने एक चोर को पकड़ने की जगह न केवल बचाया पर उसे खुल कर चोरी करने दी।

तभी एक दिन इस पहेली का खुलासा हो गया। एक विधवा औरत जिसका कच्चा मकान बाबा जी के घर के साथ ही था पर बाद में किसी दूसरे स्थान पर चली गई थी बाबा जी के लड़कों को मिलने आई। लड़को के दिल में उस औरत के लिये बहुत आदर था। इसका कारण यह था कि जब उसके

पति की मृत्यु हो गई और वह बहुत मुसीबत के दिन काट रही थी तो बाबा जी ने उसकी सहायता करनी चाही पर उसने किसी भी तरह की सहायता लेने से ईनकार कर दिया था हालां कि उसके दो छोटे बच्चे भी थे। बाबा जी ने जब उसके इस स्वभिमान को देखा तो अधिक जोर न दिया।

औरत ने हाल चाल पूछने के बाद लड़को से कहा कि वह अपने अपराध को उनके सामने स्वीकार करने आई है।————मैं पति की मृत्यु के बाद वहुत बुरे समय से गुजर रही थी। पर मैने किसी से भी सहायता लेना ठीक न समझा। एक समय आया कि खाने के लाले पड़ गये। मेरा अपना कुछ नहीं था पर बच्चों की भूख सहन नहीं हुई और क्योंकि आपका गोदाम साथ ही था और मझे सब भेद था, मैने

शेष पृष्ट 7 पर

SURELY, TWO IS FOR JOY!

Archana Phull

One for sorrow and two for joy! Every child expresses this on the sight of two birds together. I also used to do this in school days, without any realisation of what it meant. As I grew, I could sense that it was the crux of life. We can extend this feeling to any living being. When there are two persons together at home, the husband and the wife or the brother and the sister, there is a feeling of togetherness, sharing inter-dependence and a secure living. When one is living alone, it is independence at the cost of enjoyment. People who live alone may say anything in the name of individualism, freedom to live, but at the end of the day, they need someone to share feelings with and depend upon. I don't say that people who chose to be single don't enjoy life. They do spend quality time their own way, but their eyes are continuously searching for someone they can rely upon, may be to pass some time, though according to their own suitability.

Similar is the case of a single child at home, who may have full right on all the resources at home, but misses out a great opportunity to learn many things that can happen only when there are two children at home-the feeling of togetherness, sharing and shelter in each other's company. There is actually no match of being together with someone. It is natural way of living. I have seen people changing for the positive, when they get married. I have seen them shed bad habits and doing sacrifice for their spouse in their own little ways. And they thoroughly love to do this and serve each other in every sphere of life. They may fight, argue or may even stop talking to each other over differences, but then that's the natural way of life. “It adds spice to life,” say many of my friends.

With two persons, the husband and the wife, or children, it is a great learning. Say for instance, if in my home, my husband is a public health expert and my son is a sportsman, I know much of the two different things and can

use the knowledge according to the need. They know quite a lot about my profession that is journalism. The natural sharing at home makes you knowledgeable in more than one field and helps in growth, improves outlook, apart from building capacities. More importantly, after years of living together, one can find the husband and the wife willingly develop similar habits without any hitch and function as a perfect unit. In old age, they become indispensable to each other so much that they can't live without each other. Generally, if either of the two passes away, the partner is also unable to live long.

I glaringly saw it in the case of an elderly couple, who were in their 70s, and were living on the edge with none to take care of them. Once when I tried to arrange an old age home for the two with separate sections for men and women, they refused. The two elders, who made their both ends meet through rag picking, were happy in each other's company so much that they preferred living in a temporary shelter with lesser food security than living in a government shelter with proper food security, separately. After a few months, the old woman died of some disease and later her husband also passed away. Surely, two is always for joy!

पृष्ट 7 का शेष

खाने के लिये अनाज के दाने चुराने शुरू कर दिये। बाबा जी ने मुझे चोरी करते देख लिया था, पर उस महात्मा ने सब समझ कर आंखें बन्द कर ली। कुछ समय बाद मुझे दूसरे गांव में काम मिल गया और मैं यहां से चली गई। यह तो सब को पता है कि बाबा जी बहुत नेक दिल इन्सान थे पर शायद यह सब को पता नहीं कि उनका दिल कितना उदार था जिस ने कि मरने तक भी किसी को इस बात का खुलासा नहीं किया।

हम सब जीवन में कुछ ऐसी घटनायें देखते हैं जो कि अपराध या पाप तो होते हैं पर पवित्र होते हैं। बुद्धिमता इसी में हैं कि हम बाबा जी जैसी उदारता दिखायें ओर उन्हें किसी को न बता कर अपने साथ ही इस दुनिया से ले जायें।

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

'संवेदनशीलता' जैसे गुण ने मोहनदास को महात्मा गांधी बना दिया

संवेदनशील होना मनुष्यता की सब से पहली पहचान है जिसका साधारण अर्थ है कि कुछ करते हुये यह ध्यान रखना कि हमारे द्वारा किये जा रहे काम का सामने वाले या फिर आसपास के लोगों पर क्या कोई विपरीत असर तो नहीं होगा? संवेदनशीलता में इस से भी बढ़ कर एक और जो बात आती है वह है दूसरे के दुख को अपना दुख समझना और उसे दूर करने के लिये अपने सुख-दुख की परवाह किये बिना उसके निवारण में जुट जाना। महात्मां गांधी के शब्दों में---वैष्णव जन को तेने कहिये जो पीड़ पराई जाने रे। अर्थात् वही व्यक्ति सही माइने में धार्मिक है जो दूसरों की पीड़ा को समझ सके।

मैं महात्मा गांधी की आत्म-कथा पढ़ रहा था। इसे पढ़ते-पढ़ते मैने सीखा कि जिस गुण ने मोहनदास को महात्मा गांधी बना दिया वह थी उन में संवेदनशीलता। निम्न एक घटना उस समय की हैं जब वह एक नवयुवक ही थे और दक्षिण अफ्रीका के किसी मुकदमें के सिलसिले में गये थे। उन्हीं के शब्दों में यह घटनायें वर्णित हैं।

''मुकदमा खत्म हो गया था इसलिये दक्षिण अफ्रिका में मेरे रहने का कोई औचित्य नहीं था और मैं हिन्दुस्तान लौटने की तैयारी में लग गया। मैं अखवार पढ़ रहा था तो एक कोने में हिन्दुस्तानियों के बारे में एक खबर थी जिसका शीर्षक था 'इण्डियन फ्रंचाइज' यानी कि हिन्दुस्तानियों का मताधिकार। इस खबर का आशय यह था कि हिन्दुस्तानियों को जो नेटाल प्रान्त का सदस्य चुने जाने का अधिकार है वह छीन लिया जायेगा। वहां की असैम्बली में इस पर बहस चल रही थी। मैं तो इस कानून से अनभिज्ञ था पर मजे की बात यह थी कि वहीं पर रह रहे किसी भी हिन्दुस्तानी को उनका मूल अधिकार छीनने वाले बिल की खबर न थीं।

मैने अब्दुल्ला सेठ, जिन के लिये मुकदमा लड़ने मैं हिन्दुस्तान से बुलाया गया था, जब इस बारे में पूछा तो उनका जवाब था--- इन बातों से हमें क्या लेना? व्यापार पर किसी बात का संकट आये तो हमें पता लगना चाहिये।

क्यांकि मैने तो शीघ्र ही स्वदेश लौटना था इस लिये मैने अब्दुल्ला सेठ से केवल इतना ही कहा- ''यह कानून अगर पास हो गया तो आप सब को बड़ी मुश्किल में डाल देगा। यह तो यहां पर हिन्दुस्तानियों की आवादी को मिटाने का पहला कदम है व हमारे स्वाभिमान पर एक चोट है।''

दूसरे मेहमान भी इस चर्चा को ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। उन्होंने आपस में बात की और उनमें से एक मेरे पास आया और बोला-- ''मैं

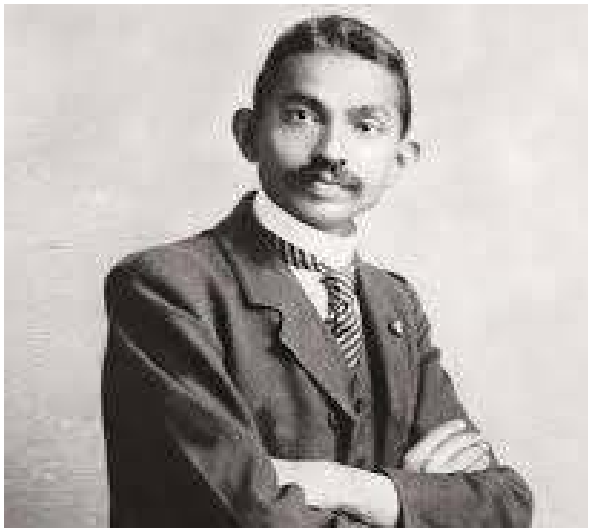

आप से अनुग्रह करूगां कि आप इस स्टीमर में न जाकर एक आध महीना रूक कर जायें। आप जिस तरह भी कहेंगे हम करेंगे, और अपने अधिकारों के लिये लड़ेंगे। बाकी सब भी उस के अनुमोदन में एक साथ अनुग्रह करने लगे और मैने एक महीना रूक जाने का निश्चय कर लिया।''

मैने इस बारे में सभी कदम लेने शुरू कर दिये। इसका सब से बड़ा फायदा यह हुआ कि सोई हुई कौम अपने अधिकारों के लिये जाग गई। जो मैने अर्जी तैयार की उस पर मैने दस हजार सहियां; हस्ताक्षर प्राप्त किये। यह काम आसान नहीं था। दस हजार व्यक्ति सारे नेटाल में फैले थे और बहुत कम लिख पढ़ सकते थें।

इस की हजार प्रतियां छापी गईं । सब अखवारों और नेताओं को भेजी गईं। इसके दो बड़े फायदे हुए। पहला सोई हुई हिन्दुस्तानी कौम अपने अधिकारों के लिये जाग गई। दूसरा हिन्दुस्तान के आम लोगों का पहली बार परिचय हुआ।

अब मैं नेटाल छोड़ सकूं, ऐसा मेरे लिये सम्भव नहीं था। लोगों ने मुझे चारों तरफ से घेर लिया और नेटाल में ही स्थाई रूप से रहने का आग्रह किया और मैं नेटाल में ही ठहर गया।''

यह घटना बताती है कि कैसे 'संवेदनशीलता जैसे गुण ने मोहनदास को महात्मा गांधी बना दिया। दूसरा एक साधारण व्यक्ति जिसका परिवार भारत में था, वह कभी परिवार को छोड़कर दूसरों के अधिकारों के लिये लड़ने के लिये कभी नेटाल में रूक कर यह सब न करता।

DOING SOMETHING EXCLUSIVE IN LIFE

Jagvir goyal

Doing something exclusive in life We, a group of friends, were wondering over the biggest invention of the man. Was it electricity or medicines, internet or computer, aero planes or textiles, mobiles or electronic gadgets? Every invention looked indispensable. Ultimately, voting was done. The mobile and the television secured maximum but equal votes.

Can anyone tell who invented these items shortlisted by us? One of us questioned. There was a big silence. No one could tell the names of inventors except some uncertain murmur over the inventor of electricity. All felt guilty.

There was a quick Google search and some inventors were found. TV was invented by John Baird, mobile phone by Martin Cooper, electricity by Benjamin Franklin, computer by Charles Babbage. Internet, medicines and textiles had many inventors who found and bettered them.

Let's salute to all of them! We spoke in unison. There were so many other essential things invented by the man. We knew none of their inventors, leave aside feeling grateful to them for making today's life so safe and comfortable. The man was indeed selfish, we discovered. He just enjoyed the inventions. By paying the cost of a liquid crystal display (LCD) or a mobile, the man thought himself as its proud owner. He was never bothered to think of or thank the inventor. What did an inventor gain by making such a big invention? He might have consumed whole of his life in inventing a thing. He was not even remembered by the human beings today, was another thought. The real inventors might not have even enjoyed their inventions. They would have invented the base models. Others would have improved them. And by that time, the original inventors would have passed away!

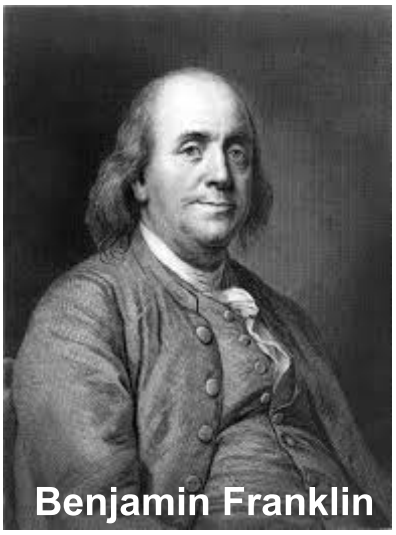

We brooded over it and drew a conclusion. An invention was made by a person not with an aim to make people remember him after his death. The driving force behind was to do something exclusive in life and feel elated over it. Everybody should try to do something exclusive in life, we decided. And this exclusivity should be aimed at contributing to the society and the world and having a feeling of elation within oneself and certainly not at winning people's applause. The pleasure behind inventing a thing and see it being put to practice had no parallel. The satisfaction that one experienced on making an invention or doing something exclusive for the society was unmatched. Inventions were not the only things to add exclusivity to life, we found. Leading an honest life and having that feeling of never succumbing to the lure of ill money, writing a book for the benefit of masses, helping the underprivileged and see them rise in life too could add exclusivity to one's life. Bringing a social change for the betterment of masses was another way. In the absence of this desire to do something exclusive in life, all could have simply born, grown, lived, struggled, raised families and died and no inventions would have been made.

इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है?

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिन्हों को धर्म से नही जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है – 'न लिंगम् धर्म कारणं' अर्थात बाहरी चिन्हों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा है – आचारः परमो धर्मः।

अच्छे दिन तभी आ सकते हैं जब हम सब इस के लिये कटिबद्ध हों। अकेली सरकार कुछ नहीं कर सकती

अभी हाल में स्कूल के 35 विद्यार्थियों ने अपनी गर्मी की छुट्टियों में, गुड़गांव शहर में लड़कियों के दो स्कूलों में शौचालय बना कर दिये। यह विद्यार्थी बाहर के अच्छे घरों के थे और बड़े स्कूलों से आये थे। इस से पहले 2,000 विद्याार्थियों वाले इन स्कूलों में सिर्फ तीन शौचालय थे। यही नहीं इन विद्याार्थियों ने 70 फुट लम्बी सड़क का निर्माण करके भी दिया।

यह सत्य है कि अच्छे दिन तभी आ सकते हैं जब हम सब इस के लिये कटिबद्ध हों। अकेली सरकार कुछ नहीं कर सकती सरकार तो सड़क बना सकती है उस पर वाहनों को तो ठीक से हमें ही चलाना होगा। संवेदनशील और धैर्यवान तो हमें खुद बनना है, उस में सरकार या मोदी क्या करेंगे? आजकल 90% जो दिल को हिला देने वाली घटनायें हो रही हैं उनका कारण कोध और संवेदनशीलता और धैर्य की कमी है। अगर हम कोध पर नियन्त्रण कर लेते हैं, और संवेदनशील और धैर्यवान बन जाये तो वैसे ही अच्छे दिन आ जायेंगे।

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values'

मित्र

जैसे हाथ शरीर की और पलकें आखों की रक्षा करती हैं ऐसे ही जो बिना किसी अपेक्षा के रक्षा करे उसे मित्र कहते हैं। पवित्र आचरण, मित्र के लिये त्याग की भावना, मित्र के सुख दुख और लाभ हानी में एक जैसा ही व्यवहार रखना, मित्र के साथ सदैव सत्य का ही आचरण रखना, ये अच्छे मित्र के गुण हैं।

गलत लोगों की मित्रता प्रातः काल की छाया के सामान होती है जो पहले लम्बी और जैसे दिन बीतता है छोटी होती जाती है। इसके विपरीत अच्छे लोगों की मित्रता सांयकाल की छाया के सामान होती है जो प्रारम्भ में छोटी और सूर्यास्त के बाद लम्बी हो जाती है।

किसी ने सत्य कहा है जब सारे लोग साथ छोड़ जाते हैं तो मित्र सहारा देता है।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

जीवन की सही दिशा

ममता सहगल

मनुष्य ईश्वर की सब से सुन्दर कृति है। परन्तु हम अपने भौतिक सुखों को पाने और उनका संग्रह करने में इतने अधिक वयस्त रहते हैं कि जीवन का जो असली उदेश्य है उससे दूर हो जाते हैं। इन भौतिक सुखों कां पाने की दौड़ हमें इस कदर अन्धां कर देती है कि हम हम उस ईश्वर का धन्यवाद करना भी भूल जाते हैं जिसने हमें यह मानव का चोला दिया। जीवन के साधन वायु, जल, फल –फूल वनस्पति और सूर्य का प्रकाश मुफत में ही दिये हैं। रात को बिजली जलाने के पैसे हम सरकार को देतें हैं। अगर बिल जमा करने में देर हो जाये तो कनैक्शन काट दिया जाता है। परन्तु ईश्वर न ही यह सब कुछ देने के पैसे लेता हे न ही कनैक्शन काटता है फिर भी हम उसके धन्यवादी नहीं होते। अर्थात सुख में उस को याद करने की आदत नहीं है। पर जब दुख आता हे तो झट से उसे याद कर लेते है।

मनुष्य के व्यवहार को हम इस सुन्दर कहानी द्वारा समझ सकते हैं। एक बहु मंजलिय इमारत को बनाने का कार्य चल रहा था। इस कार्य को देखने वाला सुपरवाइजर 6वीं मजिंल पर था। वह वहीं से धरातल पर खड़े मजदूर से कुछ कहना चाहता था उसने मोबाइल पर उस से सम्पर्क करने की भरसक कोशिश की पर शोर के कारण मजदूर को कुछ भी नहीं सुनाई दे रहा था। सुपरवाइज़र को एक तरकीब सूझी उस ने उपर से दस रूपए का नोट एक पत्थर में बांध कर फैंका। मज़दूर ने झट से रूपया डठाकर अपनी जेब में डाल लिया और यह देखने की कोशिश भी नहीं की कि यह दस रूपये का नोट कहां से आया। ओर अपने काम में लग गया। सुपरवाइज़र ने अब की बारे दस रूपए की जगह 500 रूप्ये का नोट एक पत्थर में बांध कर फैंका। पर मज़दूर ने इस बार भी वैसे ही किया झट से 500 रूप्ये का नोट उठाकर अपनी जेब में डाल लिया और यह देखने की कोशिश भी नहीं की कि यह 500 रूप्ये का नोट कहां से आया।

मजदूर के इस व्यवहार से सुपरवाइजर इतना गुस्से में आ गया कि इस बार उसने एक पत्थर उठाकर मजदूर की और फैंका। पत्थर उस मजदूर के सिर पर लगा।

स्वभाविक तौर पर उसने उपर की और देखा और सुपरवाईजर ने उसे अपना संदेश दे दिया।

यह कहानी हमारे जीवन से ठीक मेल खती है। प्रभु हमारे दिल में ही रहते हैं, हमसे बात करना चाहते हैं, ठीक दिशा देना चाहते हैं पर हम उन्हें सुनना नहीं चाहते। हम में हर किसी के जीवन में अच्छी बातें होती रहती हैं और हो रही हैं पर उन सब का श्रेय अपने को देकर हम उस ईश्वर को याद भी नहीं करते, धन्यावाद करना तो दूर की बात है। अक्सर कह देते हें कि मेरे अच्छे भाग्य या परिश्रम की बदोलत यह सफलता सम्भव हुई। या कुछ अज्ञानी किसी बाबे को श्रेय दे देते हैं।

और जिस दिन कोई बुरी अनहोनी, उस सिर में लगे पत्थर की तरह, हमारे साथ घटित होती है तो एक दम उपर देखते हैं और हमारा ध्यान ईश्वर की और जाता है।
तब हम ईश्वर को न केवल याद करते है बल्कि मुश्किल से बाहर निकालने के लिये प्रार्थना करते हैं।

कबीर जी ने वहुत सही कहा है

दुख में सिमरन सब करें सुख में करे न कोय,
जो सुख में सिमरन करे तो दुख काहे को होय।।

जब भी हमारे जीवन में कोइ अच्छी बात होती है तो सब से पहले हमें उस ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

Overparenting--the Most Common Disease In Our Rising Middle Class Families

Saguna Jain

There are no rules for parenting. There are no awards either. Yet, it is funny how we all are constantly striving, going beyond ourselves and making our kids miserable in return, for acquiring that ' best parent in the universe certificate' that doesn't really exist. From concepts like tiger moms what has emerged is many a parent-child relationships that have gone sour. Unfortunately, once this association has gone down the gravel path, there is seldom a chance of redeeming it and getting it back on a tar road.

It is our job to prepare our children for the road and not prepare the road for our children.

Dr Wendy Mogel

I am forced to share a beautiful story here that perhaps brings out the tenets of this theory of over-parenting better than anything else that I have read in recent times. A man was an avid gardener. One day, he saw a small butterfly laying a few eggs in one of the pots in his garden. Since that day he looked at the egg with ever growing curiosity and eagerness. The egg started to move and shake a little. He was excited to see a new life coming up right in front of his eyes. He spent hours watching the egg now. The egg started to expand and develop cracks. A tiny head and antennae started to come out ever so slowly. The man's excitement knew no bounds. He got his magnifying glasses and sat to watch the life and body of a pupa coming out. He saw the tender pupa struggling and suddenly felt this urge to 'help' rising from within him. He went and got a tender forcep with the intention to help the egg break. All that he intended to do was to give a nip here and a nip there to help the struggling life.

Lo! The pupa was out. The man was ecstatic! He waited now, each day, for the pupa to grow and fly about like a beautiful butterfly. But alas that never happened. The larvae pupa had an oversized head and kept crawling along in the pot for the full four weeks before it died. The man, in a depressed state of mind, went to his botanist friend who to his shock told him how in effect he had killed the butterfly! The botanical expert went on to explain that the struggle to break out of the egg helps the larvae to send the blood to its wings and the head push helps the head to remain small so that the tender wings can support it through its four week life-cycle. In his eagerness to help, the man had actually destroyed a beautiful life.

Are we also making the same mistake? In reducing the kids struggle, are we actually reducing their ability to face life's difficulties? In saving them from life's harsh realities and disappointments, are we making them incapable of living their lives on their own? In keeping them away from challenges, are we leaving them incapacitated to face any in the course of their lives? No parent wants their child to suffer in the way that perhaps they did. But research has proven that overprotected children are more likely to struggle in relationships, fail in individual endeavours and grow with lower self-esteem. As parents all that we need to do really is to be around to guide not to walk the path, help not direct, nurture not design, develop not throttle, encourage not expect and provide without making them dependent. For the self-made are known to have far more working parts than their not so self-made peers.

आर्कषण

अशोक कुमार

हर एक प्राणी में यह प्रवृति है कि वह अच्छा, आकर्षित कैसे लगे। बुलंदी,किर्ती, यश कैसे मिले, और उसकी चर्चा हो और वह याद रहें। प्रश्न उठता है आर्कषण है क्या? आर्कषण व्यक्ति में एक ऐसा खिंचवा, चुंम्बकिय शक्ति, गुण है जिससे वह दूसरों के हृदय में प्रवेश कर जाता है। कुछ ऐसे व्यक्तिगत कार्य, गुण होते है जिससे वह अन्य लोगों के हृदय में अपन स्थान निर्माणित कर लेता है। देखने, सुनने वाला उससे अति प्रभावित हो जाता है। जो आदमी आर्कर्षित हो जाता है उसके मस्तिष्क पटल, हृदय अंतरिक्ता, कानों, आंखों में एक सुखद मुस्कुराहट, आनंद, सुकून, हर्षता अंकित हो जाती है। जिसको पुनः–स्मरण ताजा करने की जिज्ञासा, अभिलाषा बनी रहती है। अतः आर्कषण व्यक्ति का ऐक ऐसा गुण है जो कि न केवल उसे ही सुख प्रदान करता है पर उससे भी अध्कि आनंद, शान्ति दूसरों को प्रदान करता है। आर्कषण में प्रेम, पीड़ा, मगन मूद्रा, वलीनता के लक्षण भी है और दीवानगी भी है। **आर्कषण भगवान द्वारा तोहफे में दिये** स्वभाविक **गुणों के कारण तो होता ही है पर वर जो व्यक्ति के अच्छे कर्मों के कारण होता है वह सदा के लिये याद किया जाता है इसका सब से सुन्दर उदाहरण है मदर टरैसा, बाबा आमटे, भगत पूर्ण सिंह और बहुत से ऐसी महान आत्मायें।**

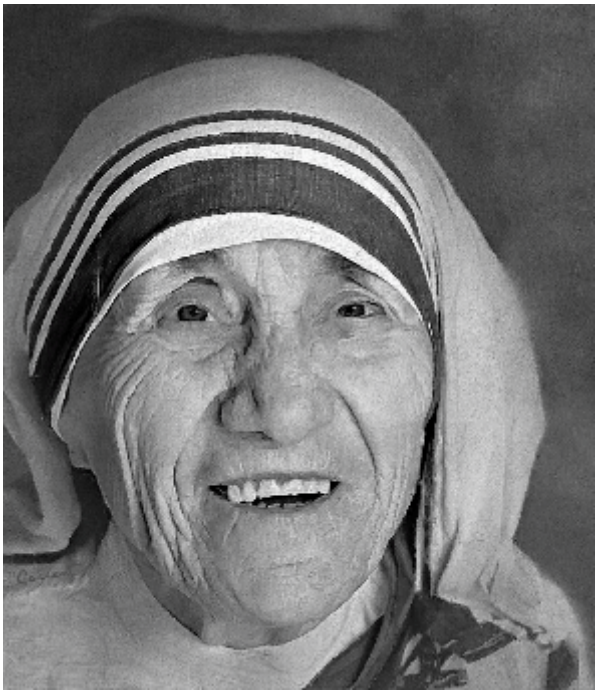

आर्कषण एक इमारत निर्माण करने समान है जिसमें मुख्य सामग्री मस्तिष्क उपज– सोंच होती है और कर्म पहचान होती है। श्रेष्ठ उपज कैसे बनेगी उसके लिए उन्नत सोंच और विचार चाहिए जो केवल सतसंग, संगति, मानव सेवा, अच्छे कर्म हेतू होती है। अगर आलोचतनामिक विशलेषण किया जाए तो कुछ आर्कषण लाभकारी होते है। जिसमें ब्यक्तिगत विकास, समृ(, ज्ञान का इजाफा होता है। समाज सभ्यताएं बनती है। कुछ आर्कषण हानिकारक होते है जो पहुंच से दूर होते है जिसमें समय, ध्न, आदर तक की हानी हो जाती है। साम्राज्य तक मिट जाते है। कुछ आर्कषण विनाशकारी होते है। जिनको अपनाने पर सर्वसव भस्म हो जाता है। जैसे भंवरा शमां में समा जाता है, वसुंध्रा सागर बन जाती है या बंजरता आ जाती है। कुछ आर्कषण स्वाद, लतकारी होते है। कुछ आर्कषण कल्याणकारी बन जाते है। कुछ आर्कषण एक तरफा, कुछ पारस्परीक, कुछ संयुक्त होते है। कुछ आर्कषण जीव, जाती, विशेष क्षेत्रा, सुंदरता, अंग, रंग, ध्र्म, स्वर, वाणी कार्य रचना, अमूल्य वस्त्राता, आध्यातमिकता हेतू भी होते है, कुछ आयु सीमा से होते है, कुछ सदैव जीवित रहते है, कुछ स्वभाविक होते है, कुछ मानव अंगों की बनावट वातावरण अनुकूल होते है, कुछ स्वर,संगीत, सारंगी, साज आधरित होते है।

कुछ प्राकृतिक आर्कषण जैसे गुलाब, रात की रानी में सुगंन्ध का होना, गन्ने या आम में रस का भरना जो कहीं भी उग जाए सुगन्धि रस लक्षण पृथिक नहीं होते। भंवरों का फुलों पर मंडराना, मधुमक्खियों का मधु एकत्रा करना। चाणक्य ने कहा है कि कोयल देखने में सुंदर नहीं होती पर स्वर आर्कषणीय होता है। कुछ आर्कषण लोकप्रियता प्राप्ती को पाने के लिए बनाए जाते है। जो कृत्रिाम होते है।

अगर वर्तमान में देखा जाए तो मानव कोई न कोई आर्कषण बनाता है। चाहे वस्त्राता, अंग–प्रर्दषणता, अभद्रता, दयावांता या श्रिगारों का सहारा लेना पड़े। वर्तमान में रफ़्तार, अलग रहना, समय का आभास बताना, सुंदर वेतन, आनंद विलासिता का जीवन, अध्कि स्त्राी, पुरुषों से अस्थाई नाते रचना ही आर्कषण है। पर कुछ आर्कषण सोंच, उच्च विचार, आर्दश उद्देश्य आधरित होते है। कुछ स्वर, वाणी, उपयुक्त शब्द चयन, आर्कषण के बिंदु होते है। कुछ दृष्य वातावरण

जैसे वन संपदा, हरियाली, सर्प समान रास्ते, झरनों का गिरना, पक्षियों की प्रातः सांयकाल में चहकना, रंग–बिरंगी तितलियों का स्पर्श और मंडराने के लिए, पुष्प चयन, सागर में बिखरी प्रातः सांयकाल की सूर्य की लालिमा और अज्ञान ग्रहों की ज्ञान पाना।

जिस प्रकार कोयल, तोते चिड़ियों का स्वर मन को भाता है उस प्रकार सभ्य पुरुषों की अमृत वाणी मानव हृदय में अपना स्थान बना लेती है। अगर वाणी कंस रुपी हो तो ठेस पहुंचाती है। अगर वाणी विभिषण, राम रुपी भयमुक्त हो तो शांति संतोष मिलता है जो आर्कषण होता है। अगर वाणी बाण बन जाए तो घाव देती है अगर शब्दावली मधुमयी हो तो समीपता, सजनता बढ़ती है जो आर्कषण के लक्षण है। महापुरुष प्रवचनों से भी आर्कषणता बनाते है। क्योंकि वह मार्ग संकेतिक, दिशानिर्देशक, दुखनिवारक प्रभु मिलन करवाते है। वहीं उनका आर्कषण है। चाणक्य ने कहा था कि वाणी की कठोरता अग्नि के जलाने से भी अध्कि दुख तपश देती है। आम लोगों में आर्कषण होने का लक्षण प्यास, भुख होती है। जिसके लिए वह छल–कपट, फरेब, अनैतिकता, अवैध्ता, अवास्तविकता दिखावे का सहारा लेता है पर वह अस्थाई क्षणिक होता है।

आर्कषण नारों से नहीं बनते, वह तो सदाचार, व्यवहार, उदाहरणों, वस्त्रों, स्वर, परमपराओं से बनते हैं, वस्त्रों धतुओं से नहीं बनते बल्कि वह सादगी, स्वर साधुता से जन्मते है। ध्न से नहीं ध्ैर्य से होता है, दक्ष भाषा से नहीं देव दीनता से होता है। ध्र्म उपदेश से नहीं ध्र्म पालना से होता है। महसूस करने से नहीं मुस्कुराहट से होता है। हर्षता से नहीं हृदय से होता है। बातों से नहीं व्यवहारों से होता है। स्थाई आर्कषण निर्माणित करना है तो वेदों के बताए मार्ग पर चलना होगा। **मदर टरैसा, बाबा आमटे, भगत पूर्ण सिंह** जैसे सेवा का मार्ग अपनाना होगा। वेद ज्ञान की खुशबू को फैलाना होगा। जब वैदिक गुण–ज्ञान का बनेगा विज्ञान, तो आर्कषण भी होगा स्वर्ण धतु समान।

उप–आबकारी और कर कमीशनर, ;सेवा निवृतद्ध, पंजाब। मो. 98789–22336

आप दुनिया के सब से अमीर व्यक्ति शायद न बन सके हां पर सब से खुश व्यक्ति अवश्य बन सकते हैं।

आप दुनिया के सब से अमीर व्यक्ति शायद न बन सके हों पर सब से खुश व्यक्ति अवश्य बन सकते हैं। इसके लिये आप को एक ही बात समझनी है, वह है कि आप दुंनिया को नहीं बदल सकते पर दुनिया में कम से कम टकराव के बिना रहने के लिये अपने आप को बदलें।

अधिकतर यह टकराव इस लिये हो रहा कि हम अपनी सोच पर अड़े रहना चाहते है। दूसरे की सोच को स्थान नहीं देने के लिये कटिबद्ध रहते है, चाहे उस में सारी सुख शांति चली जाये। अंग्रेजी **भाषा** में कहें तो (we give up our life for winning our point of view)

इस बात को हम इस मनघड़न्त कहानी द्वारा समझ सकते हैं। एक बार संयोग से ऐसे हुआ कि दो शेर एक साथ अपनी प्यास बुझाने के लिये, एक तालाब पर पहुंचे। तालाब में बहुत पानी था, इतना कि दोनों सालों तक पानी पी सकते थे। परन्तु दोनों में इस बात को ले कर ठन गई कि पानी पहले कौन पीयेगा? प्यास तो गये भूल और दोनो की भंयकंर लड़ाई आरम्भ हो गई। इतनी भयंकर कि लहु–लुहान हो गये। फिर भी लड़ते रहे। कुछ समय बाद देखते हैं कि वहां गीद्ध इकट्ठे होने शुरू हो गये थे। अब उन्हे समझ आया कि गीद्ध उनके मरने का इन्तजार कर रहे थे। दोनों ने लड़ाई बन्द की और पानी पिये बिना ही वहां से रवाना हो गये।

ऐसा होता है उन लोगों का अन्त जो अपनी शान–शौकत, ओहदे और पैसे के अंहकार से बाहर नहीं आना चाहते।

हर समय ऐसा न सोचें कि हर कोई मेरे जैसा ही बने, अपने को मेरे अनुसार ढ़ाले। अगर आप ऐसा सोचते हैं तो सम्भव है कि आप दूसरों के ही नहीं, अपनी पत्नि और बच्चों की घृणा के पात्र भी बन जायें। इससे कहीं अच्छा होगा आप दूसरों के लिये आर्दश साबित हों।

पिछली सदी के दो महायुद्ध इसी लिये हुये क्योंकि एक दूसरे को समझने की कोशिश नहीं की जाती थी।

इसके लिये आप को एक ही बात समझनी है, वह है कि आप दुंनिया को नहीं बदल सकते पर दुनिया में कम से कम टकराव के बिना रहने के लिये अपने आप को बदलें। यही खुश रहने की कुंजी है।

"A Friend is Someone Who Walks in When The World Walks Out."

How true is the saying, "A friend is someone who walks in when the world walks out." To prove that true friendship cuts across barriers of religion, race, caste, wealth and ideology, one should consider the following famous friendship.

Former President of India, Dr A P J Abdul Kalam, spent his childhood in Rameshwaram where his best buddy was Ramanadha Sastry, whose father Sakshi Lakshmana Sastry was the chief priest of Rameshwaram Temple. The friendship between the two young boys was legendary even though Abdul was a Muslim and Ramanadha was a Hindu. The differences in their religion did not did not come in the way. Their commitment was to such an extent that despite different religious ideologies, they wanted to know more about each other's religion. Thus, Abdul would inquire into Hindu religious practices and likewise, Ramanadha would be interested in knowing more about the Koran and the namaz prayer.

One day, however, there arrived in their school a new teacher, who was narrow minded. He felt uncomfortable when he saw the friendship between the two boys. So, he asked Abdul to sit at the back of the classroom, this act verily breaking Abdul's heart for that meant being separated temporarily from his friend. After the class, the two distraught boys decided to relate the incident at home for possible solutions to assuage this discrimination.

Jainulabdeen, Abdul's father, reiterated that it does not matter to which God one prays, but that one should pray with love and faith and therefore persons of different religions can be the best of friends. However, Ramanadha's father, took a stricter view. Being the Chief Priest, he did not want a teacher to brainwash the minds of innocent children. He came to the school and admonished the teacher. The teacher realized his mistake and apologized. Thus, differences in religion should not be a deterrent to true friendship.

क्या आप पिछले जीवन के बारे में जान सकते हैं?

डा महेश विद्यालकांर

किसी गुरू के दो शिष्य थे। एक ने गुरू से प्रश्न पूछा––'' क्या आप पिछले जीवन के बारे में बता सकते हैं?'' गुरू ने कहा––'' हां, बता सकता हूं ।''

दूसरे शिष्य ने पूछा ––'' क्या आप अगले जीवन के बारे में बता सकते हैं?'' गुरू ने कहा––'' हां, **मैं भविष्य के बारे में भी बता सकता हूं ।'' उन्होने दोनो शिष्यों** को समझाया–––'' पिछले जीवन के आधार पर तो यह जीवन मिला है। यदि पिछले जीवन मे धर्म व पुण्य न किये होते, तो वर्तमान जीवन इतना सुखी सुन्दर व सब साधनों से सम्पन कैसे मिलता? इससे सिद्ध है कि पिछला जीवन सुन्दर **श्रेष्ठ व पवित्र था।** वर्तमान जीवन, बुराइयों, दोशों, पाप, अधर्म से बचा हुआ है, तो निश्चित है कि अगले जीवन में अच्छी योनि प्राप्त होगी। असंख्य जीव नाना योनियों में जो कर्मफल भोग रहे हैं, वह पुनर्जन्म का सबसे बड़ा प्रमाण है। पुनर्जन्म के कर्मफल के कारण असख्य जीव नरक भोग रहे हैं। धर्म–कर्म, दान– पुण्य, पूजापाठ आदि वर्तमान व अगले जन्म को सुधारने के लिये किये जाते हैं। पुनर्जन्म की भावना पर विश्वास करते हुए हमे वर्तमान जीवन को सॅभालना, सुधारना और उंचा उठाना चाहिये। इसी में जीवन की सार्थकता और उपयोगिता है। जो प्राप्त जीवन को दुर्गणो ,दुर्व्यसनो तथा गल्त कामों मे गुजारते हैं, वे अगले जन्मो में **निकृष्ठ** योनियों को प्राप्त करके जन्म जन्मांतरों तक दुखः, कष्ट, अभाव आदि में रहते है। अतः पुनर्जन्म हमे सॅभालने, सुधारने का अवसर देता है।

धर्म नहीं, अधर्म व पाखंड हैं जीवन को कष्टप्रद बनाने वाले अनुश्ठान

सीताराम गुप्ता,

रविदास कहते हैं, ''मन चंगा तो कठौती में गंगा। प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग–अंग बास समानी।'' रविदास हों, कबीर हों, नानकदेव हों, तिरुवल्लुवर हों, हमारे सभी संत–महात्मा हमेशा धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने और उसका पालन करने पर ज़ोर देते रहे हैं। सभी ने धर्म के नाम पर प्रचलित आडंबरों का विरोध व खंडन किया है। आज लोगों ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए भले ही उनके मंदिर बना कर उनकी मूर्तियाँ स्थापित कर दी हों और उनकी पूजा भी करने लगे हों लेकिन कबीर जैसे संत ने तो मूर्तिपूजा का स्पश्ट रूप से खंडन किया है। कबीर कहते हैं :

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़,
उससे तो चक्की भली पीस खाय संसार।

अर्थात् यदि पत्थर या पत्थर की मूर्ति पूजने से भगवान मिलते हैं तो क्यों न मैं पहाड़ की ही पूजा करूँ? उससे (पत्थर की मूर्ति से) तो पत्थर से बनी आटा पीसने की चक्की अच्छी या महत्त्वपूर्ण है जिससे सारा संसार आटा पीस कर अपनी भूख मिटाता है। बड़े–बड़े शहरों और महानगरों के उपासना–गृहों के तो क्या कहने! आजकल तो कई मंदिर ऐसे भी बन गए हैं जहाँ श्रद्धालुओं का नहीं दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहता है। वे पर्यटन स्थल के रूप में ज़्यादा पहचाने जाने लगे हैं।

आज हम न केवल विशाल व भव्य पूजा स्थलों का निर्माण कर रहे हैं अपितु धर्म व भक्ति के नाम पर प्रदूषण में भी खूब वृद्धि कर रहे हैं। जुलूस व शोभायात्राएँ निकाल कर आम नागरिकों के जीवन में मुश्किलें बढ़ा रहे हैं। छोटा या बड़ा कोई भी आयोजन क्यों न हो लाउडस्पीकर का इस्तेमाल आम हो गया है। कीर्तन व जागरण आदि के नाम पर इतना ध्वनि प्रदूषण होता है कि कुछ मत पूछिए। सभी धर्मों के धर्मस्थलों से सुबह–सुबह ही तेज़ आवाज़ में धार्मिकता बरसनी प्रारंभ हो जाती है जिससे बच्चों, बूढ़ों, बीमारों व रात की शिफ़्ट में काम करने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। आम नागरिक के जीवन को कष्टप्रद बनाने वाली क्रियाएँ धर्म नहीं हो सकतीं। ईंट–पत्थरों से निर्मित मंदिर–मस्जिद की उपयोगिता और धर्म के नाम पर शोर–शराबे की प्रवृत्ति का खंडन करते हुए कबीर ने तो स्पश्ट शब्दों में कहा है :

कांकर–पाथर जोड़ि के, मस्जिद लई चुनाय,
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहरा भया ख़ुदाय।

प्रश्न उठता है कि आख़िर पूजा–स्थल और पूजा–पाठ के नाम पर शोर–शराबे की आवश्यकता ही क्या है? मंदिर को ही लीजिए। मंदिर एक पावन स्थल माना जाता है लेकिन यह श्रद्धालुओं अथवा आगंतुकों की भावना ही है जो किसी पूजा–स्थल अथवा इबादतगाह को पवित्रता का दर्जा देती है। यदि भावना शुद्ध–सात्त्विक है तो ईंट–पत्थरों से बने निर्जीव ढाँचे व लाउडस्पीकर लगाकर शोर करने की बिलकुल आवश्यकता नहीं है। वास्तव में आज भोली–भाली जनता को धर्मांध बनाकर अपना उल्लू सीधा किया जा रहा है। जो भी हो आज अधिकांश धर्म स्थल व्यक्ति और समाज के लिए आध्यात्मिक उन्नति के साधन व केंद्र न रह कर कुछ लोगों के लिए मोटी कमाई के स्रोत बन गए हैं। हमें धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझकर बाह्याडंबर से बचने का प्रयास करना चाहिए तभी हम सही मायनों में धर्म का पालन कर सकेंगे।

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-A, चण्डीगड़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

धागा

सीताराम गुप्ता,

पिछले रक्षाबंधन के उपरांत पूरे एक साल तक मैं जिन हालातों से गुज़रा था सभी जानते हैं। करुणा भी मेरे हालात से बेख़बर नहीं थी। मदद तो दूर साल भर तक उसने न तो कभी हमारे घर आने की ज़रूरत समझी और न ही कुछ पूछताछ करने की। क्या साल में एक दिन भाई की कलाई पर एक धागा लपेट देने मात्रा से भाई–बहन के इस पवित्र और महत्त्वपूर्ण रिश्ते को सँभालकर रखा जा सकता है? मैंने फ़ैसला कर लिया कि करुणा और उसके परिवार के सदस्यों से कोई संबंध नहीं रखूँगा। बेशक करुणा मेरी इकलौती बहन है और मैं उसका इकलौता भाई लेकिन दिल पर पत्थर रखकर मैंने ये निर्णय ले लिया कि भविष्य में कभी भी उससे राखी नहीं बँधवाऊँगा। जब दिलों में ही प्रेम नहीं तो प्रेम का नाटक करने का क्या औचित्य हो सकता है, किसी भी तरह ये बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी। मैंने अपने निर्णय से घर के सभी सदस्यों को अवगत करा दिया था। अगले रक्षाबंधन

के सभी सदस्यों को अवगत करा दिया था। अगले रक्षाबंधन पर अलबत्ता तो करुणा आएगी ही नहीं और अगर आएगी भी तो मैं किसी भी क़ीमत पर उससे राखी नहीं बँधवाऊँगा।

रक्षाबंधन निकट ही था। घर में बेचैनी व्याप्त हो गई। माँ, पत्नी और बच्चे सभी मेरे इस निर्णय से बेहद दुखी नज़र आ रहे थे। आख़िर रक्षाबंधन का दिन भी आ ही पहुँचा। वैसे तो करुणा प्रायः दोपहर के बाद ही आती थी लेकिन आज वो सुबह–सुबह ही आ पहुँची। हम चाय पी रहे थे।

चाय–नाश्ता छोड़कर बच्चे अपनी बुआ से लिपट गए। उनकी बातें ही ख़त्म नहीं हो रही थीं। करुणा ने बच्चों से कहा कि तुमसे बाद में निपटूँगी पहले मुझे अपने भाई प्रदीप से निपटने दो। वह किचन में गई और वहाँ से थाली लेकर उसमें राखी,

मिठाइयाँ व अन्य ज़रूरी सामान रखकर सीधे मेरे पास पहुँची। जैसे ही उसने थाली मेज़ पर रखकर राखी उठाई मैंने चुपचाप अपनी कलाई उसकी तरफ बढ़ा दी। मेरा पाशाण–हृदय मेरा साथ छोड़ चुका था। करुणा और उसके परिवार के सभी सदस्यों के लिए आर्शीवादों की वर्षा हो रही थी। पवित्र भावों से निर्मित एक सूक्ष्म–सा धागा रिश्तों को बख़ूबी सँभालने में सक्षम था।

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ
Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

वैदिक काल में यौनशिक्षा व योगशिक्षा दोनों ही थे

डा. जगदीश शास्त्री

आधुनिक भारतीय समाज में यौनविकृति, यौनरोग एवं यौन अपराध निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं इससे चिंतित समाज के कुछ लोग समाधान के रूप में सुझाव देते हैं कि बच्चों को यौनशिक्षा देनी चाहिए।ऐसे ही कुछ अन्य लोग हैं ये चाहते हैं कि बच्चों को यौनशिक्षा न देकर योगशिक्षा और नैतिकशिक्षा देनी चाहिए।

वैदिककाल से ही यौनशिक्षा और योगशिक्षा दोनों ही देने की परंपरा रही है। इसके लिए ब्रह्मचर्यशिक्षा शब्द का उपयोग किया जाता है। विद्यार्थीजीवन को ब्रह्मचर्य अवस्था अथवा ब्रह्मचर्य आश्रम के नाम से बताया गया है। ब्रह्मचर्य शब्द का योगशिक्षा और यौनशिक्षा दोनों ही अर्थ हैं। ब्रह्म शब्द का अर्थ है—परमात्मा, वेद, विद्या और बल। चर्य का अर्थ है प्राप्ति व उपासना के योग्य। इस प्रकार ब्रह्मचर्य का अर्थ हुआ—ब्रह्म परमात्मा की उपासना करना, वेद व विद्या प्राप्त करना और बल प्राप्त करना। परमात्मा, विद्या और शारीरिक बल की प्राप्ति बहुत ही महान् कार्य व महती उपलब्धि है जो बहुत ही शारीरिक परिश्रम और मानसिक एकनिष्ठा से सिद्ध होते हैं। शरीर व मन से निर्बल व्यक्ति इन्हें नहीं प्राप्त कर सकता। इस कारण विद्यार्थी को शरीर से शक्तिशाली तथा मन से दृढ़ संयमी होना आवश्यक है। शरीर में वीर्यतत्व मनुष्य के बल, उत्साह व शारीरिकशक्ति का पर्याय है। वीर्य हमारे भोजन का तथा शरीर का सारतत्व है। जो अन्न हम खाते हैं उसका प्रथम रस बनता है उसके पश्चात् क्रमशः रक्त, मांस, अस्थि, मज्जा, वीर्य और ओज बनता है। इस प्रकार वीर्य हमारे शरीर का अन्तिम सारतत्व है। यह हमारी शारीरिक और मानसिक शक्ति प्राप्त करने का ईंधन है। जो वीर्यवान् होता है वही ओजस्वी होता है। जो निर्वीर्य होता है वह ओजहीन, निस्तेज होता है। निर्वीर्य की कार्यक्षमता व स्मरणशक्ति निर्बल हो जाती है जो विद्या, बल एवं ईश्वर की प्राप्ति में बड़ा बाधक है। ज्ञान, बल और ईश्वर की प्राप्ति का साधन वीर्य है, इस वीर्य की रक्षा होती है संयम से। इसी कारण योगशास्त्र के ऋषि ब्रह्मचर्य का अर्थ संयम करना लिखते है।[1] इस शिक्षा का उदेश्य छात्र व साधक को यह बताना है कि उक्त ज्ञान, बल और ईश्वर की प्राप्ति रूप साध्य में इन्द्रियसंयम रूप साधन का महत्व सर्वोपरि है। उक्त साध्य की प्राप्ति में इन्द्रियसंयम प्राथमिक, प्रमुख व अनिवार्य साधन है। इसीलिए यह शिक्षा प्राचीनकाल में उपनयन, वेदारंभ संस्कार के समय माता, पिता व आचार्य, आचार्या के द्वारा अनिवार्य रूप से विद्यार्थी को दे दी जाती थी।

योन इच्छा का कारण है उत्तेजक तामसिक भोजन का खान–पान, उत्तेजक दृश्य देखना, उत्तेजक संवाद व संगीत सुनना और विपरीतलिंगी ऑपोजिट सेक्स की समीपता व संगति होना या संगति करना इत्यादि। इस समस्या का समाधान प्राचीनकाल में छात्र–छात्रा को अलगघर–गृहस्थ से दूर छात्रावास में रहकर विद्या अध्ययन कराया जाता था। एकल शिक्षा SingleSex Education के नियम का कठोरता से पालन किया जाता था। लड़का–लड़की के सहशिक्षा Co-education का नियम नहीं था। छात्रावास की व्यस्त दिनचर्या, सदाचार की शिक्षा और ईश्वरभक्ति के कारण संयम में रहना सरल हो जाता है। आज भी यह विधि उतनी ही उपयोगी और प्रभावकारी है जितना प्राचीनकाल में था। उदाहरण के रूप में आज भी विद्यमान ऐसे एकलिंगी अनेक गुरूकुल व अन्य कई आवासीय शिक्षण संस्थाओं को देखा जा सकता है।

पौराणिक पंडित के आगे स्वामी अग्निवेश क्यों निरूत्तर नजर आये?

भारतेन्दु सूद

अभी मुझे टीवी पर आयोजित चर्चा में पौराणिक धर्म गुरू, आर्य समाज के नेता स्वामी अग्निवेष और सांई मत के एक संचालक की वार्तालाप सुनने का अवसर मिला। कुछ समय के लिये ऐसा लगा कि पौराणिक धर्म गुरू ने स्वामी अग्निवेश, जो कि आर्य समाज की पैरवी कर रहे थे, की धज्जियां उड़ा दी और स्वामी अग्निवेश कोई सन्तोषजनक जबाव नहीं दे पा रहे थे।

पौराणिक धर्म गुरू का कहना था कि हम में और आप आर्य समाजियों में फर्क ही कहां है? वार्ता के कुछ अंश नीचे दिये हैं।

-- हवन आप करते हैं, हवन हम भी करते हैं।
-- वेदों को आप मानते हैं, हम भी मानते हैं।
-- ओम् का स्मरण आप करते हैं, हम भी करते हैं।
-- गायत्री को आप मानते हैं, हम भी मानते हैं।
-- अगर चढ़ावा हम इकट्ठा करते हैं तो आप भी वैसे ही थाली घुमाते हैं।
-- आर्य समाज में आप ने मूर्ति नहीं रखी तो क्या, हवन के आगे झुक कर कसर पूरी कर लेते हैं। आपने धन बटोरने के लिये हवन के ब्रहमा बिठा रखे होते हैं और यजमानों की भी जेब खाली करतें है।
-- घरों में आप वही सब कुछ कर रहे हैं जो हम कर रहें हैं। ग्रह और टीप मिला कर शादी करते हो। यही नहीं आप के पंड़ित भी यह सब कर रहें हैं।

जब स्वामी अग्निवेश ने कहा कि हम मूर्ति पूजा इस लिये नहीं करते क्योकि इस में ज्ञानेन्द्रियां ध्यान मुद्रा में नहीं होतीं तो पौराणिक धर्म गुरू का कहना था कि मूर्ति पूजा में तो ज्ञानेन्द्रियां ही ध्यान में नहीं होती, आपके हवन में जिसे आपने ईश्वर भक्ति का साधन बनाया है, उस में तो ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां दोनों ही ध्यान मुद्रा में नहीं होतीं?

जो भी संस्था अपनी पहचान भुला देती है उस की स्थिति यही होती है कि जो आज आर्य समाज की है। महर्षि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना हिन्दू धर्म में फैले पाखण्डों, अन्धविश्वासों, मिथ्या व अनावश्यक कर्मकाण्डों, रूढ़ीवाद और इनके द्वारा फैले हिन्दू धर्म की बुराईयों को दूर कर ठीक रास्ता दिखाने के लिये की थी परन्तु 1947 के बाद स्वार्थी तत्वों ने आर्य समाज को जटिल कर्मकाण्ड, अन्धविश्वासों, रूढ़िवादिता और संस्कृत-हिन्दी के प्रचार का केन्द्र बना दिया।

कुछ भी प्रोग्राम हो चाहे वेद सप्ताह, आर्य समाज का उत्सव या फिर घर में सत्संग, हम करते क्या हैं:

1- सब से पहले, एक-दो घण्टे चलने वाला लम्बा हवन, चाहे किसी को कुछ समझ आये या न आये, इस से पण्डितजी को कोई सरोकार नहीं होता, उनको तो अपनी दक्षिणा से मतलब होता है। पण्डितों ने लोगों में यह अन्धविश्वास फैला दिया है कि ईश्वर संस्कृत में ही प्रार्थना सुनता है और पण्डितजी ने मन्त्र बोल दिये तो जो बैठे हैं उनका संदेश भी ईश्वर को चला जायेगा। इस से बड़ा अन्धविश्वास और कोई नहीं हो सकता, खास कर उस संस्था द्वारा जो अन्धविश्वासों के विरूद्ध लड़ने के लिये बनी थी और जिस के संस्थापक ने तर्क की कसौटी पर परख कर ही कुछ भी अपनाने का संदेश दिया है। ईश्वर भक्ति ध्यान के बिना सम्भव नहीं जिसकी विधि ब्रहमयज्ञ के अनुसार है और स्वामी दयानंद भी ब्रहम यज्ञ ही करते थे। और सब के लिये सन्धयां बनाई थी।

2- उसके बाद एक घंटा भजन जिसमें गाने वाले की आवाज का महत्व है। गानेवाला आर्य समाजी है व तपस्वी विद्वान है, इसका कोई महत्व नहीं। मेरा पूछना है कि अगर भजन व संध्या ठीक है तो कीर्तन क्यों नहीं? कीर्तन में भी वही मनोरंजन है।

3 भाषण अब बन्द ही हो गया है। अगर होता है तो पण्डित जी किसी मन्त्र का अर्थ आधा घंटा बोल देते हैं। एक बात और इसे भाषा का दोष कहें या कुछ और, एक ही मन्त्र का अर्थ पण्डितजी अलग-अलग बतातें हैं। उपदेशक तो मंच पर सजाने के लिये ही रह गया है। आज विचार का कोई महत्व नहीं रह गया है।

उस के बाद लंगर के नाम पर शादियों की तर्ज पर अच्छा खाना पीना हो गया।

यह हो गया आर्य समाज का प्रोग्राम। ऐसे में पौराणिक धर्म

गुरू का कहना कि हम में और आप आर्य समाजियों में फर्क ही कहां है, गलत कहां हैं?

यह फर्क तब नजर आये अगर हम इन गुरूकुल के पण्डितों को अलग कर स्वामी दयानंद के अनुरूप आर्य समाज की बात करें जो कि आर्य समाज के दस नियमों में हैं। क्या हैं वे बातें--

1- ईश्वर निराकार व अजन्मा है, उस की मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर को ध्यान द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

2- आर्य समाज वेद के उसी रूप को मानता है जो स्वामी दयानंद ने सामने रखे न की उस रूप को जिन में इन पडितों ने विष्णु, इन्द्र, शिव आदि को अलग-अलग भगवान बताया है जिस में हवन में बलि का प्रावधान बताया गया है। जिस में ग्रह व फलित ज्योतिष को ठीक कहा है।

3- आर्य समाज वेद के उसी रूप को मानता है जिसमें अन्धविश्वास का कोई स्थान नहीं है, न कि उसको कि जिस में सब मनघड़न्त कहानियां हों। पूंछ, सींग, वहु-अंगों वाले भगवान हों।

4- हम सारे विश्व को एक परिवार मानकर सारे संसार के उपकार की बात करते हैं।

5- जातिवाद का आर्य समाज में कोई स्थान नहीं है। छोटे वर्ग की उन्नति में ही हम सबकी उन्नति समझने की बात है।

6- आर्य समाज असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने की बात करता है न कि असत्य पर टिके रहने को कहता है, क्योंकि वह सत्य विचार या कथन किसी समय पूर्व समय में मान्य था तथा उसे किसी बड़े व्यक्ति अथवा किसी गुरू समान विद्वान पुरूष ने कहा था।

स्वामी दयानंद ने मनुष्य के जीवन को यज्ञमय बनाने के लिये पांच यज्ञ बताये--- ब्रहम यज्ञ, अग्निहोत्र, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ जब कि इन गुरूकुल वालों ने अपनी कमाई के लिये हवन को ही सब कुछ बना दिया। दूसरे यज्ञ की तो कोई बात ही नहीं करता।

स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के नियमों में यह कहीं नहीं कहा कि संस्कृत जरूर पढ़ो। उन्होने परिस्थितियों के अनुसार संस्कृत के साथ मुख्य रूप से हिन्दी को अपनाया। आर्य समाज के जो चार बड़े प्रचारक हुये- स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, गुरूदत विद्याार्थी और पं. लेखराम, यह सभी पंजाब के ही थे। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के अतिरिक्त यह लोग संस्कृत के ज्ञान के बिना ही 20 सालों में आर्य समाज को अपनी बुलन्दियों पर ले गये और उस युग को आर्य समाज का स्वर्णिम युग कहा जाता है। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी ने भी संस्कृत बहुत बाद में सीखी पर प्रचार वह उर्दू और फारसी में ही करते थे।गुरूकुलों के पढ़े लिखे पण्डित तो 1918 में आने शुरू हुये परन्तु तब तक तो आर्य समाज अपनी बुलन्दियों की ओर अग्रसर होकर स्वर्णिम युग का स्पर्श कर चुका था।

अच्छा होगा यदि आर्य समाज अपनी एक अलग पहचान बनाये। यह पहचान है स्वामी दयानंद द्वारा बनाये दस नियमों को जीवन में धारण करना। जैसे धर्म धारण करने वाली चीज है, बोलकर या लिखने मात्र से काम नहीं चलता वैसे ही आर्य समाज भी धारण करने वाली विचारधारा है। आर्य समाजी का आचरण ही उसकी पहचान होती है। लम्बे-लम्बे हवन, संस्कृत और हिन्दी प्रचार यह आर्य समाज नहीं हैं। गुरूकुल वालों के प्रचार से बचें। आपने इन्हे कभी अपने बच्चों को गुरूकुल में पढ़ाते देखा या अपने घरों में हवन करते देखा? अपने शहर में ही सर्वे करके देख लो।

सच्चे प्रगतिशील progressive आर्य समाजी बनें न कि इन गुरूकुल वालों की तर्ज पर पौराणिक आर्यसमाजी। हम दक्षिणा देने वाले बने न कि जीवन भर लेने वाले।

लाला लाजपतराय के शब्दों मे--''स्वामी दयानंद को जिन लोगों ने समझा वे इंग्लिश जानने वाले ही थे। संस्कृत जानने वाले तो उनके हर पल पर विरोद्धी थे।''

महात्मा आनन्द स्वामी के शब्दो में

हिन्दी रक्षा आन्दोलन के बाद इमानदारी से मैने एक बात जो समझी वह थी कि आर्य समाज का भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं। भाषा पर अपनी शक्ति खर्च करने की बजाये प्रचार में शक्ति खर्चे।

अधिक जानकारी के लिये अगले अंक में लेख पढ़े '' आर्य समाज और संस्कृत''

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

महिला वृद् आश्रम के कमरे बनाने का काम शुरू होने जा रहा है। जो भी सज्जन अपने माता/पिता या किसी अन्य व्यक्ति की समृति कमरा बनाना चाहता हो तो कृपया करके संपर्क करें।

श्री नीरज कोड़ा आश्रम के बच्चों के साथ

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

योगिंदर पाल कौड़ा, **नरेन्द्र गुप्ता** **लेखराम (+91 7589219746)**

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी

शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hydrabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163 , Saharanpur-09412131021

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Saroj Kaura

Namrta Soni

Neerupma

Ghanshyam Singh Verma

Mr & Mrs. Bhasin

Kiran Mukhija

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870